आचार्य नेमिचंद्र सिद्धांत-चक्रवर्ती विरचित

कषाय मार्गणा

Presentation Developed By: श्रीमति सारिका छाबड़ा

www.whatsstatus.com
क्रोध

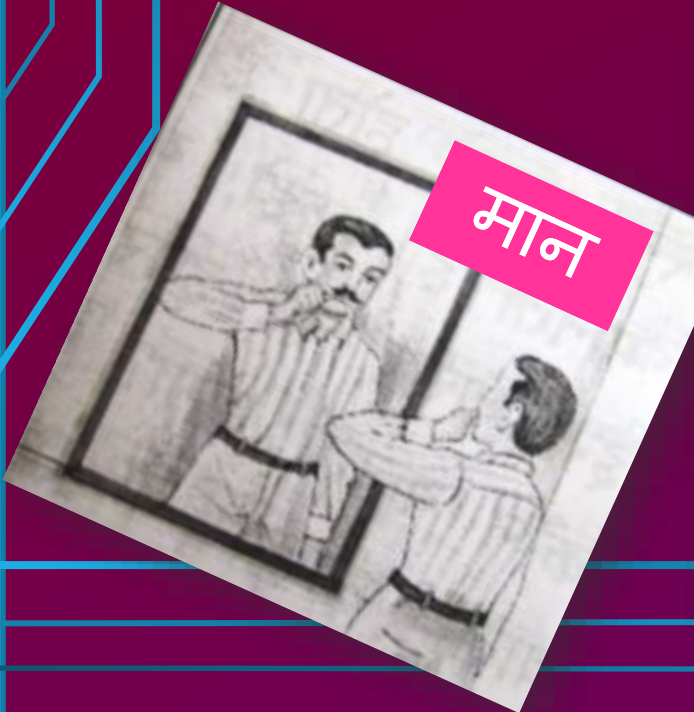

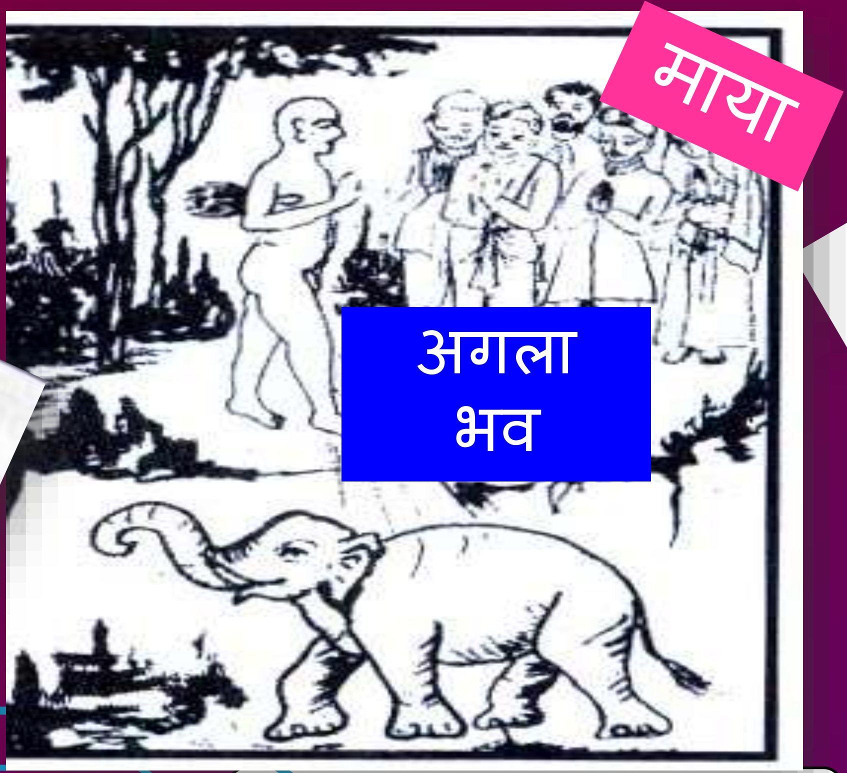

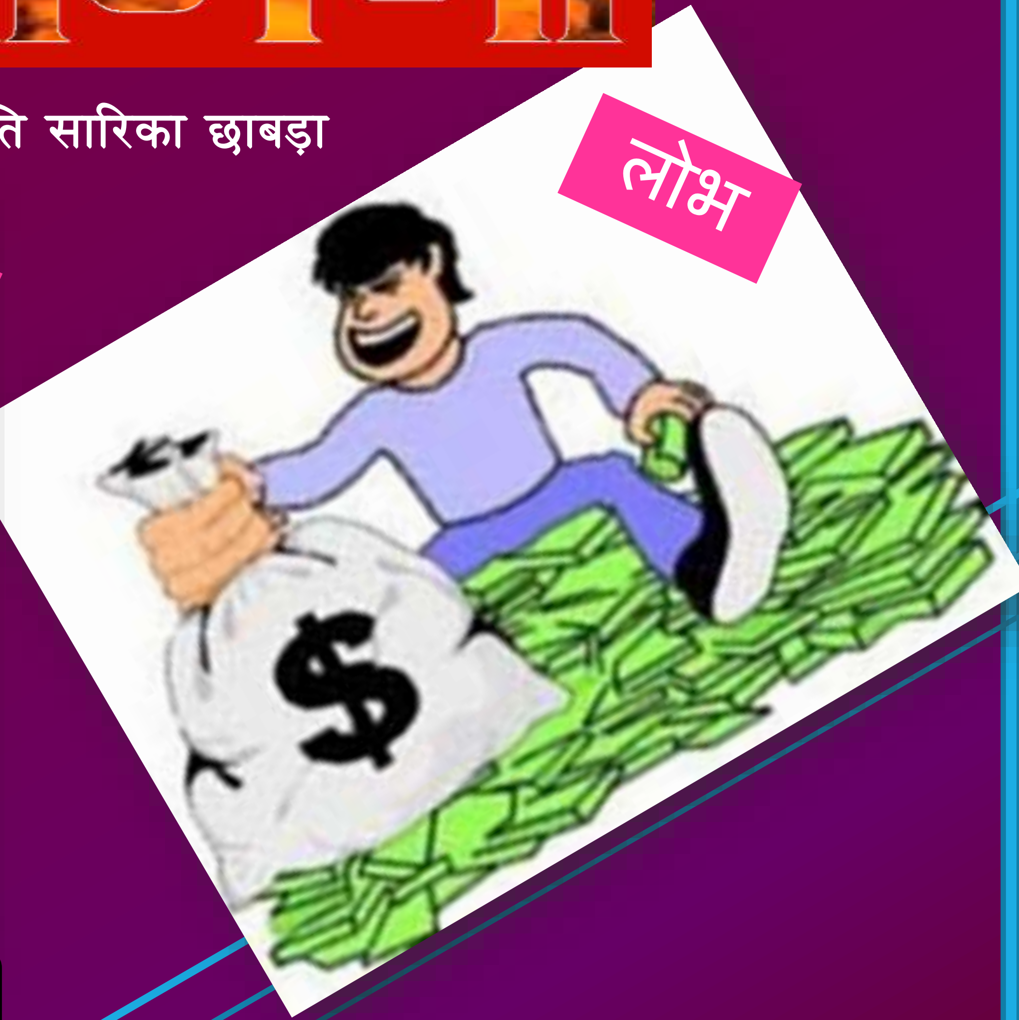

www.JainKosh.org

गाथा 1 : मंगलाचरण

सिद्धं सुद्धं पणमिय जिणिंदवरणेमिचंदमकलंकं।

गुणरयणभूसणुदयं जीवस्स परूवणं वोच्छं॥

- जो सिद्ध, शुद्ध एवं अकलंक हैं एवं
- जिनके सदा गुणरूपी रत्नों के भूषणों का उदय रहता है,
- ऐसे श्री जिनेन्द्रवर नेमिचंद्र स्वामी को नमस्कार करके
- जीव की प्ररूपणा को कहूंगा ।

सुहदुक्खसुबहुसस्सं, कम्मक्खेत्तं कसेदि जीवस्स।
संसारदूरमेरं, तेण कसाओ त्ति णं वेंति॥282॥

- अर्थ - जीव के सुख-दुःखरूप अनेक प्रकार के धान्य को उत्पन्न करनेवाले तथा
- जिसकी संसाररूप मर्यादा अत्यन्त दूर है
- ऐसे कर्मरूपी क्षेत्र (खेत) का यह कर्षण करता है, इसलिये इसको कषाय कहते हैं ॥282॥

www.JainKosh.org

कषाय

जैसे —	वैसे ही —
किसान	जीव
हलादिक से	क्रोधादिक कषाय से
खेत को	कर्मक्षेत्र को
संवारता है	अनेक प्रकार के सुख-दुःखरूप फल उत्पन्न करने योग्य करता है

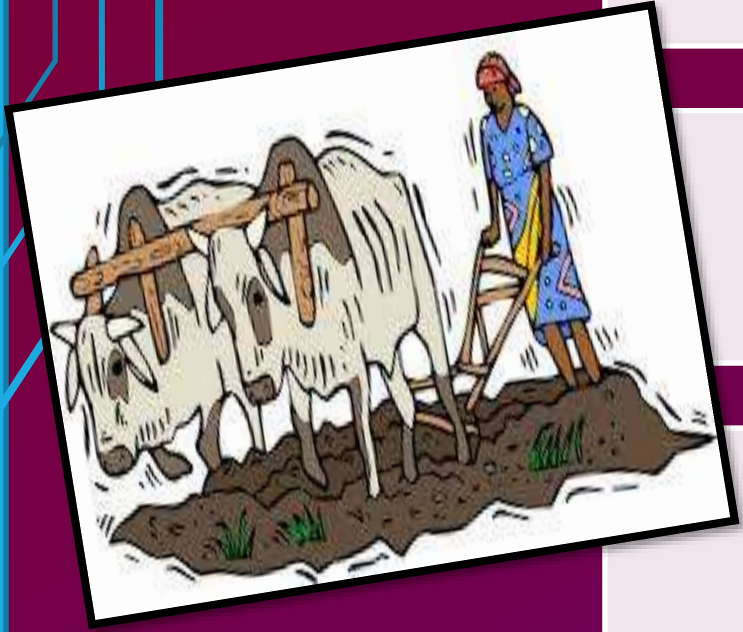

कैसा है कर्मक्षेत्र ?

जिसमें इंद्रिय सुख, शारीरिक-मानसिक दुःखरूप अनेक प्रकार का अन्न उपजता है ।

जिसकी अनादि-अनन्त पंच परावर्तनरूप मर्यादा है ।

सम्मत्तदेससयल-चरित्तजहक्खादचरणपरिणामे।
घादंति वा कसाया, चउ सोल असंखलोगमिदा॥283॥

- अर्थ - सम्यक्त्व, देशचारित्र, सकलचारित्र, यथाख्यात चारित्ररूपी परिणामों को जो कषे, घाते, न होने दे, उसको कषाय कहते हैं।
- इसके अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण, संज्वलन – इस प्रकार चार भेद हैं।
- अनंतानुबंधी आदि चारों के क्रोध, मान, माया, लोभ – इस तरह चार-चार भेद होने से कषाय के उत्तर भेद सोलह होते हैं, किन्तु कषाय के उदयस्थानों की अपेक्षा से असंख्यात लोकप्रमाण भेद हैं ॥283॥

कषाय के भेद

सामान्य से	• 1
विशेष से	• 4 (अनन्तानुबंधी आदि)
क्रोधादि चौकड़ी अपेक्षा	• 16
नोकषाय सहित चौकड़ी	• 25
उदयस्थान के विशेष की अपेक्षा	• असंख्यात लोकप्रमाण

कषाय (25)

कषाय (16)

नोकषाय (9)

कषाय(16)

- क्रोध
  - अनंतानुबंधी
  - अप्रत्याख्यान
  - प्रत्याख्यान
  - संज्वलन
- मान
  - अनंतानुबंधी
  - अप्रत्याख्यान
  - प्रत्याख्यान
  - संज्वलन
- माया
  - अनंतानुबंधी
  - अप्रत्याख्यान
  - प्रत्याख्यान
  - संज्वलन
- लोभ
  - अनंतानुबंधी
  - अप्रत्याख्यान
  - प्रत्याख्यान
  - संज्वलन

Kosh

नोकषाय (9)

- हास्य
- रति
- अरति
- शोक
- भय
- जुगुप्सा
- स्त्रीवेद
- पुरुषवेद
- नपुंसकवेद

अनन्तानुबंधी कषाय

अनन्त + अनुबन्ध

अनन्त = अनन्त संसार का कारण मिथ्यात्व; ऐसे मिथ्यात्व के साथ संबंधरूप करे अथवा

अनन्त = अनन्त संसार अवस्थारूप काल; ऐसे संसार के साथ संबंधरूप करे

वह अनन्तानुबंधी कषाय है ।

अप्रत्याख्यानावरण कषाय

अ + प्रत्याख्यान + आवरण

ईषत् / किंचित् + त्याग = किंचित् त्याग याने अणुव्रत

उस पर आवरण करे, नष्ट करे, उसे अप्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं ।

प्रत्याख्यानावरण कषाय

प्रत्याख्यान + आवरण

महाव्रतरूप सकल त्याग को + आवरै, नष्ट करे

उसे प्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं ।

संज्वलन कषाय

सं + ज्वलन

समीचीन, निर्मल यथाख्यात चारित्र को + दहन करे

उसे संज्वलन कषाय कहते हैं ।

अनंतानुबंधी	अप्रत्याख्यानावरण	प्रत्याख्यानावरण	संज्वलन
तत्त्वार्थश्रद्धानरूप सम्यक्त्व का घात हो	देशचारित्र का घात हो	सकलचारित्र का घात हो	यथाख्यातचारित्र का घात हो
अनंत संसार (मिथ्यात्व) के साथ संबंध कराये	किंचित् त्याग न होने दे	पूर्ण त्याग न होने दे	जो संयम के साथ प्रज्वलित रहे

कषायों की शक्ति

अनन्तानुबन्धी	तीव्रतर
अप्रत्याख्यान	तीव्र
प्रत्याख्यान	मंद
संज्वलन	मन्दतर

विशेष

उदय

- एक समय में 4 (क्रोध, मान, माया, लोभ) में से किसी एक कषाय का ही उदय आता है ।
- जिस कषाय का उदय आ रहा है गुणस्थान के अनुसार उस कषाय के उतने प्रकारों का उदय आएगा । जैसे मिथ्यादृष्टि है तो क्रोध के उदय के समय (अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानावरणादि) 4 प्रकार के क्रोध का उदय आएगा ।

बंध

- एक समय में गुणस्थान अनुसार सभी कषायों का बंध एक साथ होता है । जैसे मिथ्यादृष्टि जीव 16 कषायों का बंध प्रतिसमय करता है ।

सिलपुढविभेदधूली-जलराइसमाणओ हवे कोहो।
णारयतिरियणरामर-गईसु उप्पायओ कमसो॥284॥

❀अर्थ - शिलाभेद, पृथ्वीभेद, धूलिरेखा और जलरेखा के समान उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, अजघन्य और जघन्य शक्ति से विशिष्ट क्रोध कषाय जीव को क्रम से नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति और देवगति में उत्पन्न कराती है ॥284॥

क्रोध कषाय

शिला भेद (उत्कृष्ट)

जैसे पाषाण के खण्ड होने पर बहुत घनाकाल बीते बिना मिलता नहीं

वैसे क्रोध होने पर बहुत घना काल बीते बिना क्षमारूप मिलन को प्राप्त नहीं होता ऐसा क्रोध

पृथ्वी भेद (अनुत्कृष्ट)

जैसे पृथ्वी के खण्ड होने पर बहुत काल बीते बिना मिलती नहीं है,

वैसे क्रोध होने पर बहुत काल बीते बिना क्षमारूप मिलन को प्राप्त नहीं होता, ऐसा क्रोध

ainKosh

क्रोध कषाय

धूलि रेखा (अजघन्य)

जैसे धूलि में की गई रेखा थोड़ा काल बीते बिना मिलती नहीं

वैसे क्रोध होने पर थोड़ा काल गए बिना क्षमारूप मिलन को प्राप्त नहीं होता, ऐसा क्रोध

जल रेखा (जघन्य)

जैसे जल में की गई रेखा बहुत अल्प काल बीते बिना मिलती नहीं,

वैसे क्रोध होने पर बहुत थोड़ा काल बीते बिना क्षमारूप मिलन को प्राप्त नहीं होता, ऐसा क्रोध

inKosh.

e picture can't be displayed.

ऐसा क्रोध होने पर उस-उस क्रोध संबंधी गति, शरीर आदि को जीव बांधता है ।

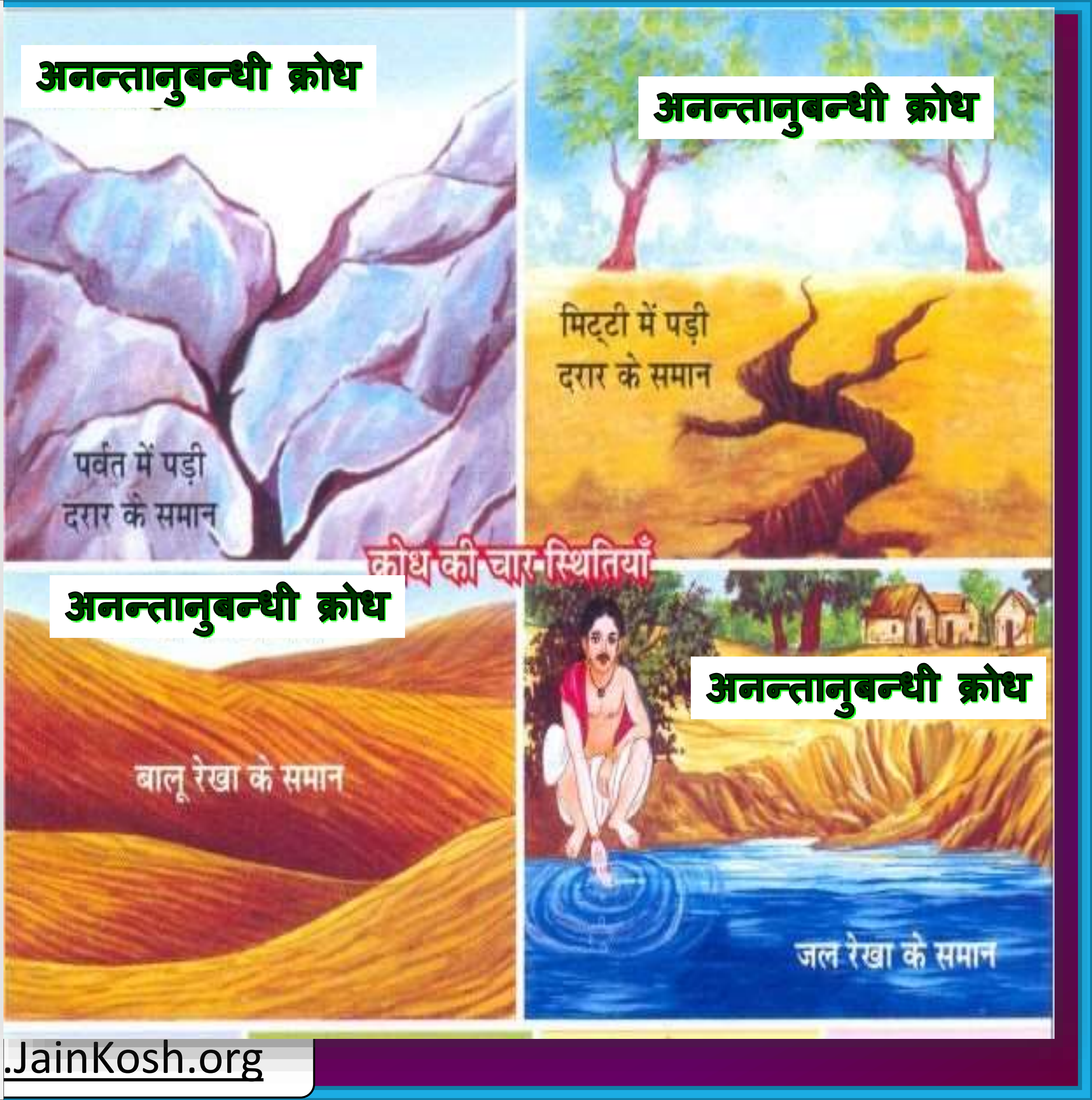
अनन्तानुबन्धी क्रोध
पर्वत में पड़ी दरार के समान
अनन्तानुबन्धी क्रोध
मिट्टी में पड़ी दरार के समान
क्रोध की चार स्थितियाँ
अनन्तानुबन्धी क्रोध
बालू रेखा के समान
अनन्तानुबन्धी क्रोध
जल रेखा के समान
.JainKosh.org

सेलट्ठिकट्ठवेत्ते, णियभेएणणुहरंतओ माणो।
णारयतिरियणरामर-गईसु उप्पायओ कमसो॥285॥

- ❁अर्थ - मान भी चार प्रकार का होता है।
- ❁पत्थर के समान, हड्डी के समान, काठ के समान तथा बेंत के समान – ये चार प्रकार के मान भी क्रम से नरक, तिर्यंच, मनुष्य तथा देवगति के उत्पादक हैं ॥285॥

मान कषाय

शैल

जैसे पाषाण बहुत घना काल बिना नमाने योग्य नहीं होता

वैसे बहुत घने काल बिना जो विनयरूप नमन को प्राप्त नहीं होता, ऐसा मान ।

अस्थि

जैसे अस्थि (हड्डी) घना काल बिना नमाने योग्य नहीं होती

वैसे घना कालबिना जो विनयरूप नमन को प्राप्त नहीं होता, ऐसा मान

मान कषाय

काष्ठ

जैसे काष्ठ (लकड़ी) थोड़े काल बिना नमाने योग्य नहीं होता

वैसे थोड़े काल बिना जो विनयरूप नमन को प्राप्त नहीं होता, ऐसा मान

बेंत

जैसे बेंत की लकड़ी बहुत थोड़े काल बिना नमाने योग्य नहीं होती

वैसे बहुत थोड़े काल बिना जो विनयरूप नमन को प्राप्त नहीं होता, ऐसा मान

ऐसा मान होने पर उस-उस मान संबंधी गति, शरीर आदि कर्मों को बांधता है ।

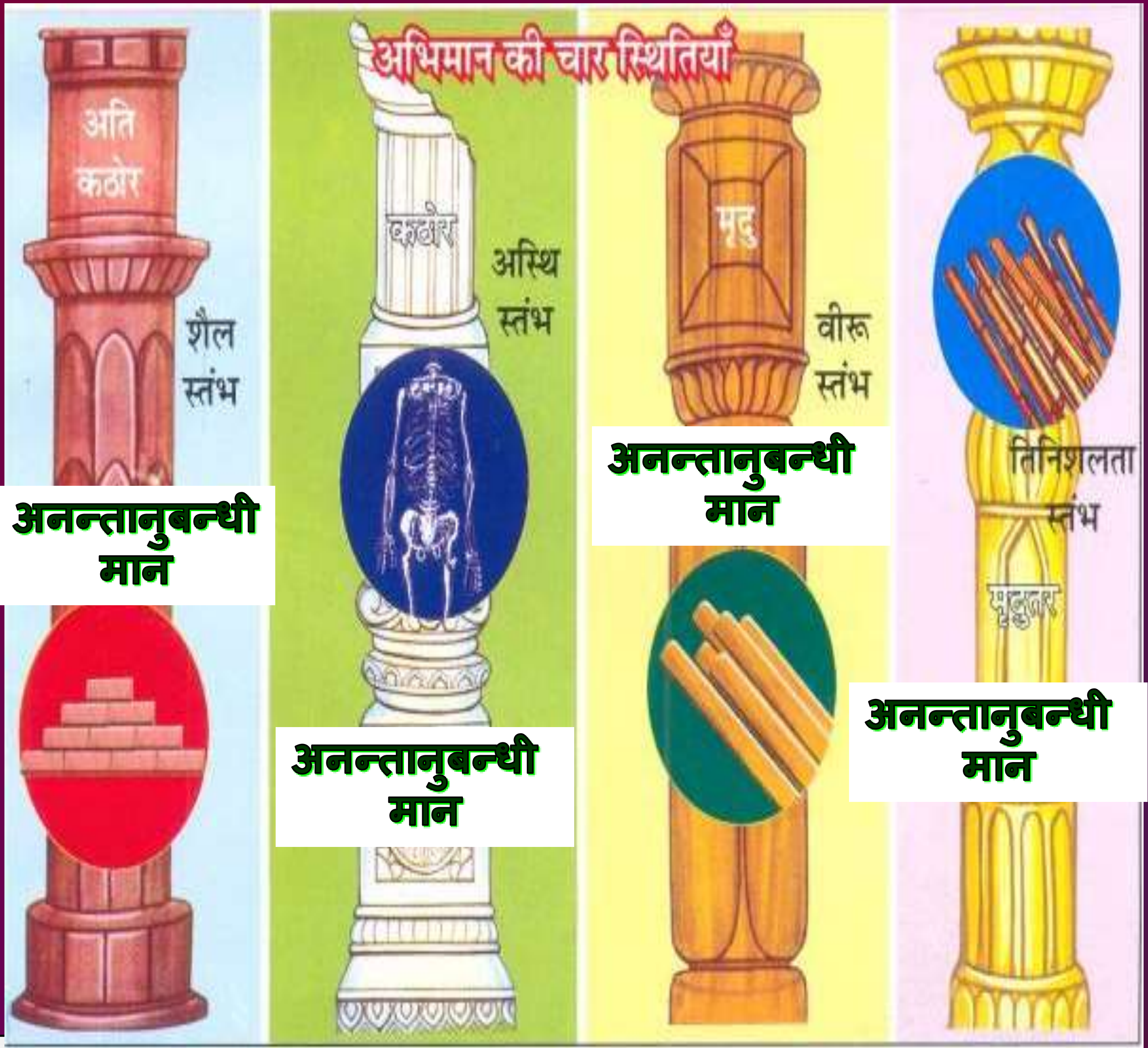
अभिमान की चार स्थितियाँ
अति कठोर
शैल स्तंभ
कठोर
अस्थि स्तंभ
मृदु
वीरू स्तंभ
तिनिशलता स्तंभ
मृदुतर

अनन्तानुबन्धी मान

अनन्तानुबन्धी मान

अनन्तानुबन्धी मान

अनन्तानुबन्धी मान

वेणुवमूलोरब्भय-सिंगे गोमुत्तए य खोरप्पे।
सरिसी माया णारय-तिरियणरामरगईसु खिवदि जियं॥286॥

❀अर्थ - बाँस की जड़, मेढ़े के सींग, गोमूत्र तथा खुरपा के समान उत्कृष्ट आदि शक्ति से युक्त माया जीव को यथाक्रम नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति और देवगति में उत्पन्न कराती है ॥286॥

माया कषाय

वेणुमूल

जैसे बाँस की जड़ की गाँठ बहुत घना काल बिना सरल नहीं होती

वैसे बहुत घना काल बिना जो सरल नहीं होती, ऐसी माया कषाय

उरभ्रक श्रृंग

जैसे मेढ़े का सींग घना काल बिना सरल (सीधा) नहीं होता

वैसे घना काल बिना जो सरल नहीं होती, ऐसी माया कषाय

माया कषाय

गोमूत्र

जैसे गायमूत्र की धारा थोड़े काल बिना सरल नहीं होती

वैसे थोड़े काल बिना सरल नहीं होती, ऐसी माया कषाय

खुर

जैसे जमीन पर बैल आदि का खुर बहुत थोड़े काल बिना सरल नहीं होता,

वैसे बहुत थोड़े काल बिना जो सरल नहीं होती, ऐसी माया कषाय

ऐसी माया होने पर उस-उस माया संबंधी गति, शरीर आदि कर्मों को बांधता है ।

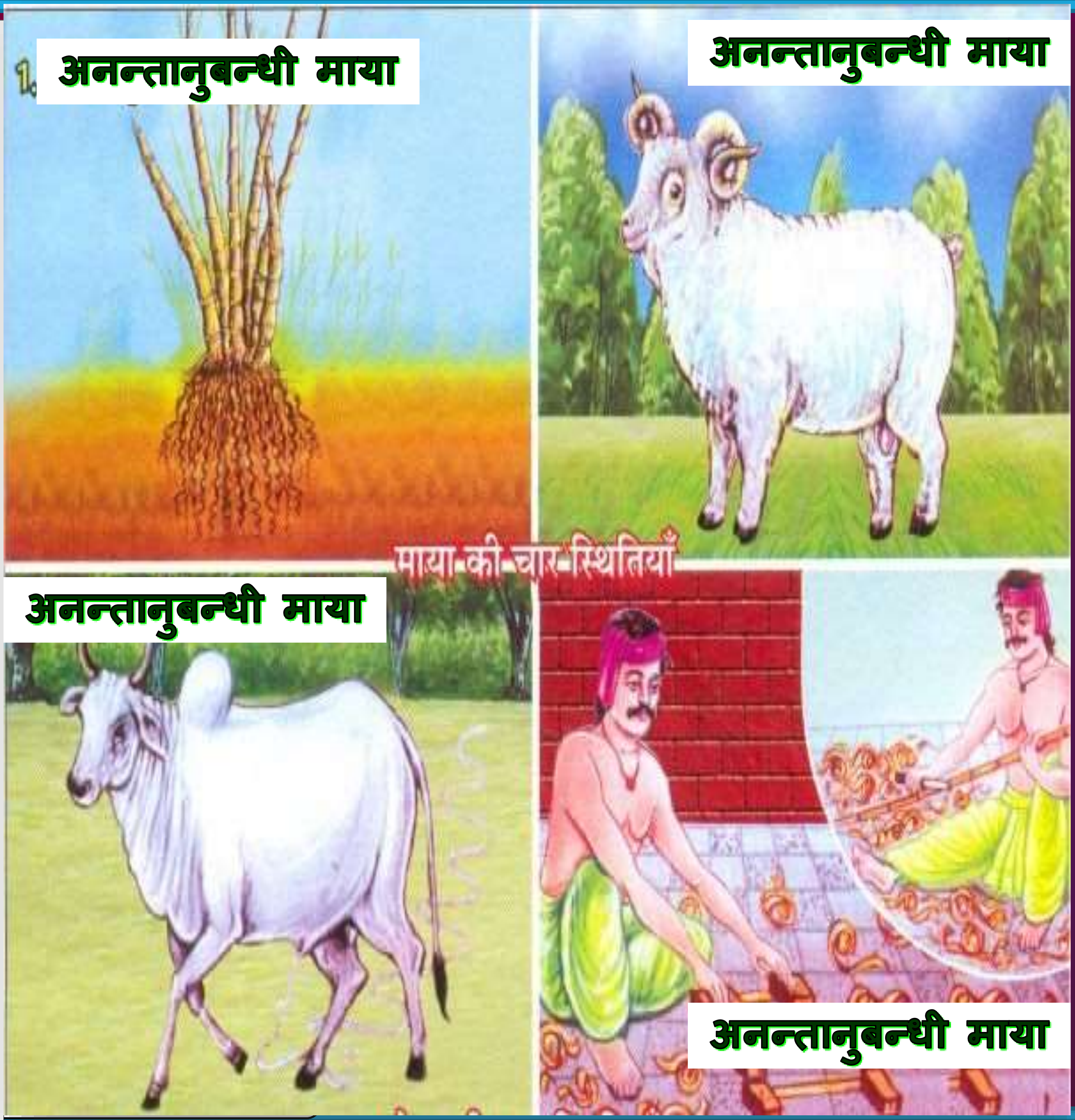
1. अनन्तानुबन्धी माया
अनन्तानुबन्धी माया
माया की चार स्थितियाँ
अनन्तानुबन्धी माया
अनन्तानुबन्धी माया

किमिरायचक्कतणुमल-हरिद्दराएण सरिसओ लोहो।
णारयतिरिक्खमाणुस-देवेसुप्पायओ कमसो॥287॥

❀अर्थ - कृमिराग, चक्रमल, शरीरमल और हल्दी के रंग के समान उत्कृष्ट आदि शक्ति से युक्त विषयों की अभिलाषारूप लोभ कषाय क्रम से जीव को नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति और देवगति में उत्पन्न कराती है ॥287॥

लोभ कषाय

क्रिमिराग

जैसे क्रिमि कीड़े के मल का रंग बहुत घना काल बिना नष्ट नहीं होता

वैसे जो बहुत घना काल बिना नष्ट नहीं होता, ऐसा लोभ

चक्रमल

जैसे पहिये का मैल (ग्रीस) घना काल बिना नष्ट नहीं होता

वैसे जो घना काल बिना नष्ट नहीं होता, ऐसा लोभ

लोभ कषाय

तनुमल

जैसे शरीर का मैल थोड़े काल बिना नष्ट नहीं होता

वैसे जो थोड़े काल बिना नष्ट नहीं होता, ऐसा लोभ

हरिद्रा-राग

जैसे हल्दी का रंग बहुत थोड़े काल बिना नष्ट नहीं होता,

वैसे जो बहुत थोड़े काल बिना नष्ट नहीं होता, ऐसा लोभ

ऐसा लोभ होने पर उस-उस लोभ संबंधी गति, शरीर आदि कर्मों को बांधता है ।

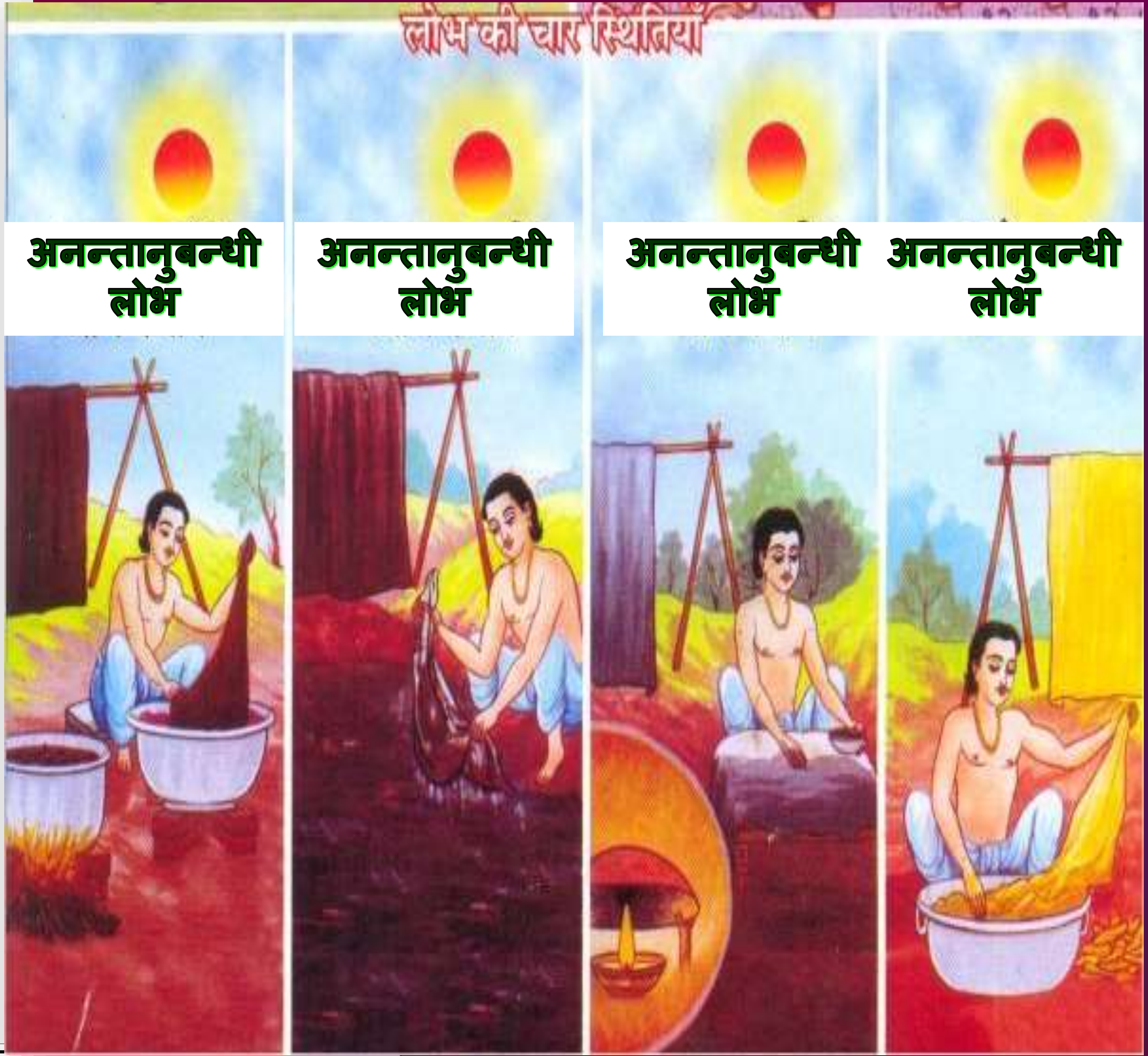
लोभ की चार स्थितियाँ
अनन्तानुबन्धी लोभ
अनन्तानुबन्धी लोभ
अनन्तानुबन्धी लोभ
अनन्तानुबन्धी लोभ

कषायों के उत्कृष्ट-जघन्य स्थान के दृष्टांत

	उत्कृष्ट	अनुत्कृष्ट	अजघन्य	जघन्य
क्रोध	शिला भेद	पृथ्वी भेद	धूलि रेखा	जल रेखा
मान	शैल	अस्थि	काष्ठ	बेंत
माया	बांस की जड़	मेढ़े की सींग	गोमूत्र	खुरपा
लोभ	किरमिची रंग	चक्रमल	शरीर का मैल	हल्दी का रंग
किस गति में उत्पन्न करती है	नरक	तिर्यंच	मनुष्य	देव

णारयतिरिक्खणरसुर-गईसु उप्पण्णपढमकालम्हि।
कोहो माया माणो, लोहुदओ अणियमो वापि॥288॥

- अर्थ - नरक, तिर्यंच, मनुष्य तथा देवगति में उत्पन्न होने के प्रथम समय में क्रम से क्रोध, माया, मान और लोभ का उदय होता है।
- अथवा यह नियम नहीं भी है ॥288॥

4 गति में उत्पत्ति के प्रथम समय में कषाय

	नरक	तिर्यंच	मनुष्य	देव
द्वितीय सिद्धांत — कषायप्राभृत के व्याख्याता यतिवृषभाचार्य अनुसार	क्रोध	माया	मान	लोभ
प्रथम सिद्धांत — महाकर्मप्रकृतिप्राभृत के कर्ता भूतबलि आचार्य अनुसार	नियम नहीं — कोई भी कषाय का उदय संभव है			

www.JainKosh.org

अप्पपरोभयबाधण-बंधासंजमणिमित्तकोहादी।
जेसिं णत्थि कसाया, अमला अकसाइणो जीवा ॥289॥

- अर्थ - जिनके स्वयं को, दूसरे को तथा दोनों को ही बाधा देने और बन्धन करने तथा असंयम करने में निमित्तभूत क्रोधादिक कषाय नहीं है तथा
- जो बाह्य और अभ्यन्तर मल से रहित हैं
- ऐसे सिद्ध परमेष्ठी अकषायी जानना॥289॥

अकषायी जीव

स्वयं को | पर को | स्व-पर को

बंधन | बाधा (घात) | असंयम

↓ में निमित्तभूत

जो कषाय (मल) है उससे रहित हैं तथा

बाह्य और अभ्यंतर मल से रहित हैं

वे अकषायी जीव हैं

कोहादिकसायाणं, चउ चउदस वीस होंति पद संखा।
सत्तीलेस्साआउग-बंधाबंधगदभेदेहिं॥290॥

❀अर्थ - शक्ति, लेश्या तथा आयु के बंधाबंधगत भेदों की अपेक्षा से क्रोधादि कषायों के क्रम से चार, चौदह और बीस स्थान होते हैं॥290॥

क्रोधादि कषायों के स्थान	
शक्ति अपेक्षा	4
लेश्या स्थान अपेक्षा	14
आयु के बंध-अबंध अपेक्षा	20

सिलसेलवेणुमूलक्किमिरायादी कमेण चत्तारि।
कोहादिकसायाणं, सत्तिं पडि होंति णियमेण॥291॥

❁अर्थ - शिलाभेद आदि के समान चार प्रकार का क्रोध, शैल आदि के समान चार प्रकार का मान, वेणु (बाँस) मूल आदि के समान चार तरह की माया, क्रिमिराग आदि के समान चार प्रकार का लोभ, इस तरह क्रोधादिक कषायों के उक्त नियम के अनुसार क्रम से शक्ति की अपेक्षा चार-चार स्थान हैं॥291॥

शक्ति अपेक्षा 4 स्थान

उत्कृष्ट	तीव्रतर	शिलाभेद, शिला, वेणुमूल, क्रिमिराग
अनुत्कृष्ट	तीव्र	पृथ्वीभेद, अस्थि, मेढ़े के सिंग, चक्रमल
अजघन्य	मंद	धूलि रेखा, काष्ठ, गोमूत्र, तनुमल
जघन्य	मंदतर	जल रेखा, बेंत, खुरपा, हरिद्रा

किण्हं सिलासमाणे, किण्हादी छक्कमेण भूमिम्हि।
छक्कादी सुक्को त्ति य, धूलिम्मि जलम्मि सुक्केक्का॥292॥

- अर्थ - शिलासमान क्रोध में केवल कृष्ण लेश्या की अपेक्षा से एक ही स्थान होता है।
- पृथ्वीसमान क्रोध में कृष्ण आदिक लेश्या की अपेक्षा छह स्थान हैं।
- धूलिसमान क्रोध में छह लेश्याओं से लेकर शुक्ललेश्या पर्यंत छह स्थान होते हैं और
- जलसमान क्रोध में केवल एक शुक्ललेश्या ही होती है॥292॥

लेश्या किसे कहते हैं?

जिसके द्वारा जीव
पुण्य और पाप से
स्वयं को लिप्त
करता है,
वह लेश्या है ।

निरुक्ति से लेश्या ?

'लिंपति एतया' इति
लेश्या=
जिसके द्वारा जीव
स्वयं को कर्म से
लिप्त करता है, वह
लेश्या है ।

कषाय के उदय से अनुरंजित योगों की प्रवृत्ति लेश्या है ।

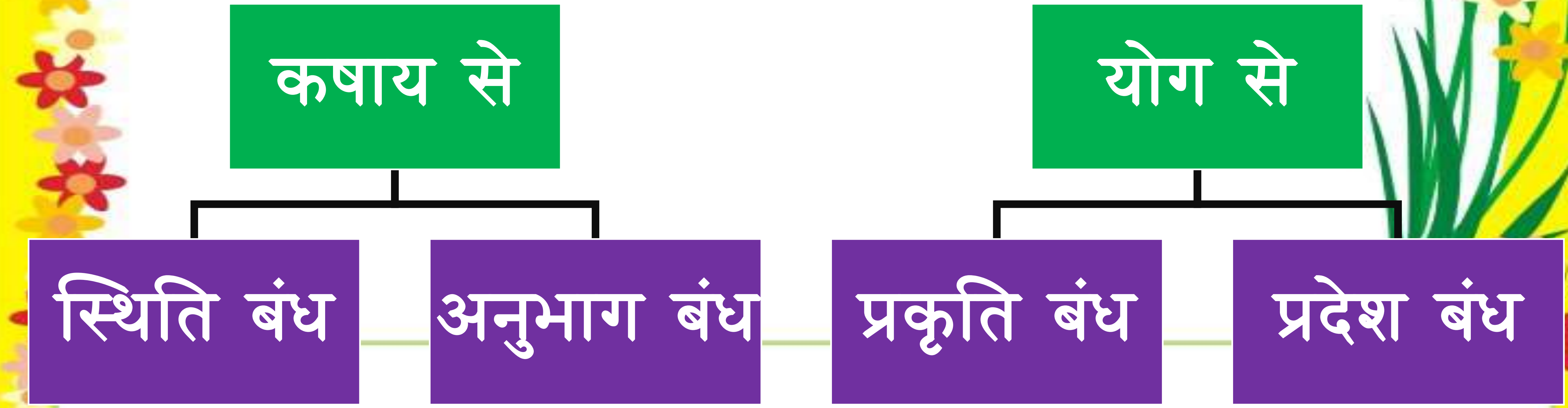

कषाय से

- स्थिति बंध
- अनुभाग बंध

योग से

- प्रकृति बंध
- प्रदेश बंध

अतः दोनों के मेलरूप लेश्या से चारों प्रकार का बंध होता है ।

कषायों के लेश्या-स्थान

शक्ति स्थान	शिलाभेद	भूमिभेद					
लेश्या स्थान	कृष्ण	कृ	कृ	कृ	कृ	कृ	कृ
			नी	नी	नी	नी	नी
				का	का	का	का
					पी	पी	पी
						प	प
							शु

कषायों के लेश्या-स्थान

शक्ति स्थान	धूलिरेखा						जल रेखा
लेश्या स्थान	कृ	नी	का	पी	प	शु	शुक्ल
	नी	का	पी	प	शु		
	का	पी	प	शु			
	पी	प	शु				
	प	शु					
	शु						

शक्ति स्थान	शिला भेद	भूमिभेद						धूलिरेखा						जल रेखा
लेश्या स्थान	कृष्ण	कृ	कृ	कृ	कृ	कृ	कृ	कृ	नी	का	पी	प	शु	शुक्ल
			नी	नी	नी	नी	नी	नी	का	पी	प	शु		
				का	का	का	का	का	पी	प	शु			
					पी	पी	पी	पी	प	शु				
						प	प	प	शु					
							शु	शु						

संक्लेश हानि स्थान →

विशुद्धि वृद्धि स्थान →

विशेष

यह सब 14 लेश्यास्थान प्रत्येक असंख्यात लोक होने पर भी पूर्व-पूर्व से असंख्यात गुणे हीन हैं ।

कुल उदयस्थान असंख्यात लोक हैं।

शिलाभेद वाले उदयस्थान उस असंख्यात लोक का बहुभाग हैं ।

शेष एकभाग का बहुभाग पृथ्वीभेद वाले उदय स्थान हैं ।

उसके शेष एकभाग का बहुभाग धूलीरेखा वाले उदय स्थान हैं ।

शेष रहा एकभाग जलरेखा वाले उदय स्थान हैं ।

पृथ्वीभेद में लेश्यास्थान की संख्या का उदाहरण

- पृथ्वीभेद के अंक संदृष्टि से 2187 स्थान माने, असंख्यात लोक = 3 माना

बहुभाग	एकभाग का बहुभाग	एकभाग का बहुभाग	एकभाग का बहुभाग	एकभाग का बहुभाग	शेष एकभाग
$2187 \times \frac{2}{3} =$	$729 \times \frac{2}{3} =$	$243 \times \frac{2}{3} =$	$81 \times \frac{2}{3} =$	$27 \times \frac{2}{3} =$	$\frac{27}{3} =$
1458	486	162	54	18	9

सेलगकिण्हे सुण्णं, णिरयं च य भूगएगविट्ठाणे।
णिरयं इगिवितिआऊ, तिट्ठाणे चारि सेसपदे॥293॥

- अर्थ - शैलगत कृष्णलेश्या में कुछ स्थान तो ऐसे हैं कि जहाँ पर आयुबंध नहीं होता। इसके अनन्तर कुछ स्थान ऐसे हैं कि जिनमें नरक आयु का बंध होता है।
- इसके बाद पृथ्वीभेदगत पहले और दूसरे स्थान में नरक आयु का ही बंध होता है। इसके भी बाद कृष्ण, नील, कापोत लेश्या के तीसरे भेद में (स्थान में) कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ नरक आयु का ही बंध होता है और कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ पर नरक, तिर्यंच दो आयु का बंध हो सकता है तथा कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ पर नरक, तिर्यंच तथा मनुष्य तीनों ही आयु का बंध हो सकता है।
- शेष तीन स्थानों में चारों आयु का बंध हो सकता है॥293॥

धूलिगछक्कट्ठाणे, चउराऊतिगदुगं च उवरिल्लं।
पणचदुठाणे देवं, देवं सुण्णं च तिट्ठाणे॥294॥

- अर्थ - धूलिभेदगत छह लेश्यावाले प्रथम भेद के कुछ स्थानों में चारों आयु का बंध होता है। इसके अनन्तर कुछ स्थानों में नरक आयु को छोड़कर शेष तीन आयु का और कुछ स्थानों में नरक, तिर्यंच को छोड़कर शेष दो आयु का बंध होता है।
- कृष्णलेश्या को छोड़कर पाँच लेश्या वाले दूसरे स्थान में तथा कृष्ण, नील लेश्या को छोड़कर शेष चार लेश्यावाले तृतीयस्थान में केवल देव आयु का बंध होता है। अंत की तीन लेश्यावाले चौथे भेद के कुछ स्थानों में देवायु का बंध होता है और कुछ स्थानों में आयु का अबंध है॥294॥

सुण्णं दुगइगिठाणे, जलम्हि सुण्णं असंखभजिदकमा।
चउचोदसवीसपदा, असंखलोगा हु पत्तेयं॥295॥

- अर्थ - इसी के (धूलिभेदगत के ही) पद्म और शुक्ललेश्या वाले पाँचवें स्थान में और केवल शुक्ललेश्या वाले छठे स्थान में आयु का अबंध है तथा जलभेदगत केवल शुक्ललेश्यावाले एक स्थान में भी आयु का अबंध है।
- इसप्रकार कषायों के शक्ति की अपेक्षा चार भेद, लेश्याओं की अपेक्षा चौदह भेद, आयु के बंधाबंध की अपेक्षा बीस भेद होते हैं।
- इनमें प्रत्येक के अवान्तर भेद असंख्यात लोकप्रमाण हैं तथा अपने-अपने उत्कृष्ट से अपने-अपने जघन्य पर्यन्त क्रम से असंख्यातगुणे-असंख्यातगुणे हीन हैं॥295॥

आयु के बंध-अबंध स्थान

शक्ति स्थान	शिलाभेद		भूमिभेद							
लेश्या स्थान	कृष्ण		कृ	कृ	कृ			कृ	कृ	कृ
				नी	नी			नी	नी	नी
					का			का	का	का
								पी	पी	पी
									प	प
										शु
आयु बंध-अबंध स्थान	0	1	1	1	1	2	3	4	4	4
		न	न	न	न	न, ति	न, ति, म	चारों आयु	चारों आयु	चारों आयु

आयु के बंध-अबंध स्थान

शक्ति स्थान	धूलिरेखा									जल रेखा
लेश्या स्थान	कृ			नी	का	पी		प	शु	शुक्ल
	नी			का	पी	प		शु		
	का			पी	प	शु				
	पी			प	शु					
	प			शु						
	शु									
आयु बंध-अबंध स्थान	4	3	2	1	1	1	0	0	0	0
	चारों आयु	ति, म, दे	म, दे	दे	दे	दे				

आयु के बंध-अबंध स्थान

शक्ति स्थान	शिला भेद		भूमिभेद							
लेश्या स्थान	कृष्ण		कृ	कृ	कृ			कृ	कृ	कृ
				नी	नी			नी	नी	नी
					का			का	का	का
								पी	पी	पी
									प	प
										शु
आयु बंध-अबंध स्थान	0	1	1	1	1	2	3	4	4	4
		न	न	न	न	न ति	न ति म	चारों आयु	चारों आयु	चारों आयु

शक्ति स्थान	धूलिरेखा									जल रेखा
लेश्या स्थान	कृ			नी	का	पी		प	शु	शुक्ल
	नी			का	पी	प		शु		
	का			पी	प	शु				
	पी			प	शु					
	प			शु						
	शु									
आयु बंध-अबंध स्थान	4	3	2	1	1	1	0	0	0	0
	चारों आयु	ति म दे	म, दे	दे	दे	दे				

www.Jai

आयु बंध स्थान = 15

आयु अबंध स्थान = 5

नरकायु बंध स्थान = 10

तिर्यंच आयु बंध स्थान = 7

मनुष्य आयु बंध स्थान = 7

देव आयु बंध स्थान = 9

क्रोधादि कषायों के स्थान

शक्ति अपेक्षा	4
लेश्यास्थान अपेक्षा	14
आयु के बंध-अबंध अपेक्षा	20

इन सभी शक्ति-स्थान, लेश्या-स्थान, आयुबंध-अबंध स्थानों के अवान्तर भेद असंख्यात लोकप्रमाण ($\equiv \partial$) हैं । परन्तु उत्तरोत्तर घटते-घटते हैं ।

उदयस्थान याने कषाय का अनुभाग का स्थान । इतना अनुभाग उदय होने पर इतनी संक्लेशता या विशुद्धि के अंश हैं ।

उनमें जीव जैसा उपयोग करे, वैसी लेश्या शुभ या अशुभ बन जाती है ।

मंद उदय में भी कृष्ण लेश्या पायी जाती है । अतः मंद उदय में संतुष्ट नहीं होना ।

विशेष

एक उदयस्थान एक ही शक्तिरूप है ।

एक ही उदयस्थान में छहों लेश्या हो सकती है ।

एक ही उदयस्थान में चारों आयु का बंध हो सकता है ।

पुह पुह कसायकालो, णिरये अंतोमुहुत्तपरिणामो।
लोहादी संखगुणो, देवेसु य कोहपहुदीदो॥296॥

❁अर्थ - नरक में नारकियों के लोभादि कषाय का काल सामान्य से अन्तर्मुहूर्त मात्र होने पर भी पूर्व-पूर्व की अपेक्षा उत्तरोत्तर कषाय का काल पृथक्-पृथक् संख्यातगुणा-संख्यातगुणा है और देवों में क्रोधादि कषाय का उत्तरोत्तर संख्यातगुणा-संख्यातगुणा काल है॥296॥

नरक और देव गति में कषाय काल

नरक गति	देवगति	काल
लोभ	क्रोध	1 अंतर्मुहूर्त
माया	मान	1 अंत × ४
मान	माया	1 अंत × ४ × ४
क्रोध	लोभ	1 अंत × ४ × ४ × ४

सव्वसमासेणवहिद-सगसगरासी पुणो वि संगुणिदे। सगसगगुणगारेहिं य, सगसगरासीण परिमाणं॥297॥

❀अर्थ - अपनी-अपनी गति में सम्भव जीवराशि में समस्त कषायों के उदयकाल के जोड़ का भाग देने से जो लब्ध आवे उसका अपने-अपने गुणाकार से गुणन करने पर अपनी-अपनी राशि का परिमाण निकलता है॥297॥

www.JainKosh.org

अंक संदृष्टि से उदाहरण:
नरक गति में कषायी जीव संख्या

मानाकि संख्यात का प्रमाण 4 है

लोभ का काल	= 1 अंत.
माया का काल	= 4 अंत.
मान का काल	= 16 अंत.
क्रोध का काल	= 64 अंत.
कुल काल	85 अंत.

उदाहरण: नरक गति में कषायी जीव संख्या

- माना कि सर्व नारकी जीव = 1700
- एक शलाका = $\frac{\text{सर्व नारकी}}{\text{कुल कषाय काल}}$
- $= \frac{1700}{85 \text{ अंत.}} = 20$

www.JainKosh.org

उदाहरण: नरक गति में कषायी जीव संख्या

लोभी नारकी	1×20 = 20
मायावी नारकी	4×20 = 80
मानी नारकी	16×20 = 320
क्रोधी नारकी	64×20 = 1280

इसी प्रकार देवों में भी निकालना । परन्तु क्रोध से लोभ तक बढ़ता काल लेना ।

देवगति में —
माना संख्यात = 4

कषाय	काल		जीवों की संख्या
क्रोध	* सामान्य से सभी का काल अंतर्मुहूर्त है * आगे-आगे संख्यातगुणा-संख्यातगुणा है	1 अंतर्मुहूर्त	$\frac{\text{कुल देव}}{\text{85 अंतर्मुहूर्त}} \times 1$ अंतर्मुहूर्त
मान		1 अंत. × 4 = 4 अंत.	$\frac{\text{कुल देव}}{\text{85 अंतर्मुहूर्त}} \times 4$ अंतर्मुहूर्त
माया		4 अंत. × 4 = 16 अंत.	$\frac{\text{कुल देव}}{\text{85 अंतर्मुहूर्त}} \times 16$ अंतर्मुहूर्त
लोभ		16 अंत. × 4 = 64 अंत.	$\frac{\text{कुल देव}}{\text{85 अंतर्मुहूर्त}} \times 64$ अंतर्मुहूर्त
कुल काल	85 अंत.		

णरतिरिय लोहमाया-कोहो माणो विइंदियादिव्व।
आवलिअसंखभज्जा, सगकालं वा समासेज्ज॥298॥

- अर्थ - मनुष्य-तिर्यंचों में लोभ, माया, क्रोध और मानवाले जीवों की संख्या जिस प्रकार इन्द्रिय मार्गणा में द्वीन्द्रियादि जीवों की संख्या आवली के असंख्यातवें भाग का भाग दे-देकर ‘बहुभागे समभागे' इत्यादि गाथा द्वारा निकाली थी, उसी प्रकार यहाँ भी निकालना चाहिये। अथवा
- अपने-अपने काल की अपेक्षा से उक्त कषायवाले जीवों का प्रमाण निकालना चाहिये॥298॥

प्रतिभाग में बाँटने का तरीका

- उदाहरण—माना कि सर्व मनुष्य राशि = 256; एवं $\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} = 4$
- $\dfrac{\text{मनुष्य जीव}}{\dfrac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}} = \dfrac{256}{4} = 64$ (एक भाग)
- बहुभाग = सर्व राशि – एक भाग

  192 = 256 − 64
- बहुभाग के चार समान भाग करो ।

$$\frac{192}{4} = 48$$

- इसे प्रत्येक कषाय में बाँट दो

	लोभ	माया	क्रोध	मान
समभाग	48	48	48	48

- शेष रहे एकभाग (64) को पुनः प्रतिभाग से भाग दो ।
- $\frac{64}{4} = 16$

- एकभाग अलग रखकर बहुभाग लोभ कषाय को दो ।
- $64 - 16 = 48$ (लोभ कषाय का प्रतिभाग)
- शेष एकभाग को पुनः प्रतिभाग से भाग लगाओ ।

- $\frac{16}{4} = 4$
- बहुभाग को माया कषाय में दो ।
- $16 - 4 = 12$ (माया कषाय का प्रतिभाग)
- शेष एकभाग को पुनः प्रतिभाग से भाग दो ।
- $\frac{4}{4} = 1$
- बहुभाग को क्रोध कषाय को दो । $4 - 1 = 3$
- शेष एकभाग को मान कषाय को दो । 1

मनुष्यों में कषायी जीवों की संख्या

	लोभ	माया	क्रोध	मान
समभाग	48	48	48	48
प्रतिभाग	48	12	3	1
कुल संख्या	96	60	51	49

इसी प्रकार वास्तविक गणित में करना चाहिए ।

कुल मनुष्य	• $\frac{\text{जगत् श्रेणी}}{\sqrt{\text{सूच्यंगुल}} \times \sqrt[3]{\text{सूच्यंगुल}}} - 1$
लोभी मनुष्य कुल मनुष्यों के चतुर्थ भाग से कुछ अधिक हैं ।	• $\frac{\text{मनुष्यराशि}}{4} +$
मायावी मनुष्य चतुर्थ भाग से कुछ कम हैं याने	• $\frac{\text{मनुष्यराशि}}{4} -$
क्रोधी मनुष्य कुछ और कम हैं —	• $\frac{\text{मनुष्यराशि}}{4} =$
मानी मनुष्य कुछ और कम हैं —	• $\frac{\text{मनुष्यराशि}}{4} \equiv$

इसी प्रकार तिर्यंचों में भी समझना चाहिए । अर्थात्

लोभी तिर्यंच	**सर्वाधिक**	$\frac{\text{तिर्यंचराशि}}{4} +$
मायावी तिर्यंच	**कुछ कम**	$\frac{\text{तिर्यंचराशि}}{4} -$
क्रोधी तिर्यंच	**कुछ कम**	$\frac{\text{तिर्यंचराशि}}{4} =$
मानी तिर्यंच	**सबसे कम**	$\frac{\text{तिर्यंचराशि}}{4} \equiv$

मनुष्य और तिर्यंच गति में कषायों का काल

लोभ का काल	सर्वाधिक
माया का काल	कुछ कम
क्रोध का काल	कुछ कम
मान का काल	सबसे कम

इस काल के आधार से भी जीवों की संख्या निकाली जा सकती है
जो पूर्वोक्त ही आएगी ।

- Reference : गोम्मटसार जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, गोम्मटसार जीवकांड - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में

Presentation developed by

Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889